दिनांक : 15 फरवरी 2014

एक दुःस्वप्न का अंत

– अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

एक दुःस्वप्न का अंत हो गया है। दिल्ली में अब तक की सबसे खराब राज्य सरकार ने इस्तीफा दे दिया है। आम आदमी पार्टी की सरकार ने उप–राज्यपाल को इस्तीफा देने का फैसला किया है। पिछले 49 दिनों में एक अपरम्परागत सरकार देखने को मिली। यह एक ऐसी सरकार थी जिसका कोई एजेंडा नहीं था और जिसकी कोई विचारधारा नहीं थी। यह लोगों की वाहवाही बटोरने और लोगों को बरगलाने वाली सरकार थी।

चालाक राजनीति और किसी प्रकार की शासन प्रणाली नहीं–यही दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार का आदर्श वाक्य था। यह एक ऐसी सरकार थी जिसे बहुमत प्राप्त नहीं था। इसके पास केवल 28 सीटें थीं। भाजपा उससे ज्यादा बड़ी पार्टी थी। आम आदमी पार्टी को कांग्रेस के समर्थन से बहुमत हासिल करने में कोई खटका नहीं लगा। उसके अधिकतर विधायक अनुभवहीन थे। उनमें परिपक्वता का अभाव था। कई बार वे विचित्र तरीके से व्यवहार करते थे। उनका आंदोलनकारी रवैया था लेकिन किसी प्रकार का शासन व्यवस्था स्थापित करने के लिए बाहरी थे।

क्या आम आदमी पार्टी सरकार ने दिल्ली में पीने के पानी की कनैक्टीविटी बढ़ाने का फैसला कर लिया था ? क्या वे दिल्ली में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं को बढ़ाने की योजनाएं बना रहे थे ? क्या उन्होंने नये स्कूल और कॉलेज स्थापित करने के बारे में कभी सोचा ? क्या उन्होंने दिल्ली में तकनीकी शिक्षा संस्थानों का विस्तार करने के बारे में कभी सोचा ? दिल्ली मेट्रो को अगले चरण में ले जाने का क्या हुआ ? क्या और फ्लाईओवर और बेहतर पीडब्ल्यूडी सड़कें बनाने का विचार कभी उनके दिमाग में आया ? ये सभी ऐसे क्षेत्र हैं जो बड़े महानगरों में रहने वाले लोगों का जीवन स्तर सुधारते हैं। यही शासन प्रणाली के प्रमुख क्षेत्र हैं। 49 दिन की सरकार के पास इन मुद्दों के बारे में सोचने का वक्त ही नहीं था।

उसने अपना रवैया सिर्फ लोगों को बरगलाने तक ही सीमित रखा। उसने गृह मंत्री, उप राज्यपाल, दिल्ली के पुलिस आयुक्त और अफ्रीकी महिलाओं के खिलाफ उत्तेजना फैलाई। उसका रवैया सिर्फ झूठ तैयार करने और काल्पनिक दुश्मन तैयार करने और बाद में उन काल्पनिक दुश्मनों पर हमला करने की ताकत के बारे में दुष्प्रचार करना था। उसमें यह अहंकार भर गया था कि सिर्फ उसके नेता ईमानदार हैं और बाकी सब आपस में समझौता कर लेते हैं। सरकार में हर दिन वे अपनी लोकप्रियता खो रहे थे। पार्टी को यह अहसास हो गया था कि सचिवालय में बैठे उसके नेता बेहद लापरवाही से व्यवहार कर रहे थे। उन्हें सड़कों पर आना ज्यादा अच्छा लगता था। उन्होंने अपने लिए बाहर निकलने का रास्ता तलाश लिया था। उनका जन लोकपाल बिल आखिरी समय तक राज बना हुआ था। विधेयक की 'लोकपाल विषय वस्तु' केन्द्रीय कानून से अलग नहीं थी बल्कि वह एक झूठा प्रचार करना चाहते थे कि उनका विधेयक केन्द्रीय कानून की तुलना में क्रांतिकारी है। उसने विधान सभा से मंजूरी के लिए परम्परागत प्रक्रिया नहीं अपनाने का फैसला किया ताकि इस्तीफे के लिए बहाना बना सके।

आम आदमी पार्टी सरकार बाहर हो गई है। उसने बहुत से ऐसे लोगों की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है जो एक वैकल्पिक राजनीति को उभरते हुए देखना चाहते थे। उनकी वैकल्पिक राजनीति बिना किसी शासन व्यवस्था के लोकप्रियता, जनता को बरगलाना, झूठ बोलना थी। ईश्वर को धन्यवाद, एक भयानक अनुभव का अंत हो गया।

*****